Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

बांरा जिले के प्रमुख दुर्ग एवं उनकी स्थापत्य कला

Anil Mermit*

Research Scholar, History Department, Kota University, Kota

सारांश – ***भारतीय स्थापत्य की परम्परा बडी प्राचीन है। मोहनजोदड़ों एवं हडप्पा में हुई खुदाई से स्थापत्य की प्राचीनता के प्रमाण उपलब्ध हुए थे। राजस्थान में सरस्वती नदी के क्षेत्र में कालीबंगा में हुई खुदाई से हडप्पापूर्व संस्कृति के अवशेष प्रकाश में आये है। कालीबंगा में सर्वप्रथम इस प्रकार के अवशेष मिले है जिन्हें सैनिक स्थापत्य की संज्ञा दी जा सकती राजस्थान की स्थापत्य कला बहुत प्राचीन है यहाँ पर कालीबंगा में सिन्धूघाटी सभ्यता की स्थापत्य कला के प्रमाण उपलब्ध है। इसी प्रकार आहड सभ्यता की स्थापत्य कला उदयपुर के पास तथा मौर्य काल में प्रस्फुटित सभ्यता के चिन्ह बैराठ में मिले है। हिन्दू स्थापत्य कला के रूप में राजस्थान में सबसे प्रमुख स्थापत्य कला राजपूतों की रही है। जिसके कारण संपूर्ण राजस्थान किलों, मन्दिरों, परकोटो, राजप्रसादों, जलाशयों, उद्योगो, स्तम्भें तथा समाधियों एवं छतरियो से भर गया है।***

----------X----------

कौटिल्य ने दुर्गो का सात भागों में वर्गीकरण किया है: नदी तट पर, नदी संगम पर, झील पर, टापू पर, मरूस्थल में, जंगल में, पहाड के शिखर पर। यह विभाजन दुर्ग की स्थिति स्थान के आधार पर किया गया है। इन दुर्गो में कौटिल्य ने गिरिदुर्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया है जिसे घेरना अत्यन्त कठिन (दुरूपरोधि) होता था। इस दुर्ग की रक्षक सेना सरलता से आक्रमणकारियों पर शिला खण्ड लुढ़काकर रोक सकती है।

प्राचीन युद्ध परम्परा तथा यहां की भौगोलिक स्थिति के कारण उत्तर भारत में तथा विशेषकर राजस्थान में दुर्गो का अत्यधिक महत्व रहा है। इस सम्बन्ध में प्राचीन मान्यता है कि गढ, गढी, किला या दुर्ग वह साधन है जिसमें रहने से गढ़पति को अपनी आत्मरक्षा का बहुत भरोसा रहता है और उसमें रहते हुए उसे बलवान शत्रु भी सहसा सता नहीं सकते। अतः दुर्ग निर्माण की परम्परा हमारे यहां बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है जिसका प्रमाण हमारे धर्म एवं नीतिशास्त्र के ग्रन्थ है जिनमें दुर्ग रचना शिल्प तथा उनके विविध भेदों का भी विशद विवेचन किया गया है।

शुक्रनीति के अनुसार राज्य के सात अंग माने गये है, जिनमें से दुर्ग भी एक है। ये राज्यांग निम्नांकित है-

स्वाम्यमात्य सुहत्कोश राष्ट्र दुर्ग बलानि च।

सप्तांग मुच्यते राज्यं तत्र मूर्धा नृपः स्मृतः।।

अर्थात (1) स्वामी (राजा) (2) आमात्य (मंत्री) (3) सुहत् (4) कोश (5) राष्ट्र (6) दुर्ग तथा (7) सेना।

संपूर्ण भारतवर्ष में दुर्ग निर्माण में राजस्थान तीसरे स्थान पर है। जहाँ दुर्गो का अत्यधिक महत्व रहा है दुर्ग निर्माण की इस परम्परा में बारां जिले का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा। बारां जिले में विशेषकर 15वीं शताब्दी से लेकर 19वीं शताब्दी तक अनेक गढों का निर्माण हुआ। इस समय मे दुर्ग, मंदिर, तालाब, कुएं, बावडियां, बगीचों और हवेलियों आदि का निर्माण करवाया गया। जो वर्तमान में भी अतीत की कहानी कह रहें है। यह काल भवन निर्माण एवं शिल्प के विकास का काल जा सकता है। ये गढ स्थापत्य कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। गढों के निर्माण के पीछे जहाँ सुरक्षा व व्यापारिक विकास की भावना थी। वहीं सांस्कृतिक गौरव के रूप में भी महत्वपूर्ण है। वास्तुकला चित्रकला और महलों के स्थापत्य के विकास का जो स्वरूप आज तक यहाँ पनप सका है। उसे इस स्तर पर लाने का श्रेय दुर्गो को ही जाता है। ये दुर्ग प्रेरणा के अजय स्त्रोत है।

दुर्ग स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं

राजपूतों की वीरता के कारण राजस्थान के स्थापत्य में शौर्य की भावना स्पष्टत दिखाई देती है। मध्य काल मे जब तुर्को के निरन्तर आक्रमण होने लगे तो राजस्थानी स्थापत्य में शोर्य के साथ-साथ सुरक्षा की भावना का भी समावेश किया गया और विशाल एवं सुदृढ दुर्ग बनवाने आरम्भ कर दिये

www.ignited.in

गए। सुरक्षा की दृष्टि से राजपूत शासकों ने अपने निवास भी दुर्ग के

भीतर बनवाये तथा पानी की व्यवस्था के लिए जलाशय खुदवाये राजपूत शासको की धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा ने दुर्ग के भीतर मन्दिरों का निमार्ण भी करवाया। 17वीं सदी में मुगलों के संपर्क से राजपूत एवं मुस्लिम कला का पारस्परिक मिलन हुआ। जिससे हिन्दू एवं मुस्लिम स्थापत्य शैलियों में समन्वय हुआ। दोनो शैलियो के समन्वय से राजस्थानी स्थापत्य का रूप निखर आया।

हिन्दु व मुस्लिम स्थापत्य का संबंध

मुगलो के संपर्क के पूर्व हिन्दू स्थापत्य शैली की प्रधानता रही जिसमें स्तम्भों, सीधे पाटों, ऊंचे शिखरों, अलंकृत आकृतियों, कमल और कलश का महत्व था। मुगल काल में राजस्थान की स्थापत्य कला पर मुगल शैली का प्रभाव पड़ा। इस शैली की विशेषताएं थी नोकदार तिपतिया मेहराब आदि। दोनों शैलियों के समन्वय से राजस्थानी स्थापत्य का रूप निखर आया। हिन्दू कारीगरों ने मुस्लिम आदेशों के अनुरूप जिन भवनों का निर्माण किया है उन्हे सुप्रसिद्ध कला विशेषज्ञ फर्गुसन ने इण्डों सोरसैनिक शैली की संज्ञा दी है।

शाहबाद का किला अपने अनूठे स्थापत्य और विशिष्ट संरचना के कारण अपनी विशेष पहचान रखता है इसकी नैसर्गिक सुरक्षा व्यवस्था अपनी बनावठ की इस अद्भूत् विशेषता के कारण शत्रु के लिये दूर से किले की स्थिति के विषय में अनुमान लगाना कठिन रहा होगा। किले को प्रवेश पर पहुंचकर ही देखा जा सकता है। क्योंकि यह किला उच्च पर्वत शिखर पर घने जंगल में स्थित है। किले के प्रवेश द्वार तक पहुंचते ही हिन्दु-मुस्लिम स्थापत्य कला से साक्षात्कार होता है। एक तरफ हिन्दू मुर्तियां है इनमें सतियों के अंकन है, वहीं दूसरी ओर एक मुस्लिम धर्म से जुड़ा मकबरानुमा स्थान बना है। किले के भीतर हिन्दु व मुस्लिम दोनों ही वास्तु शैलियों पर आधारित भव्य भवन बने है।विभिन्न देवी-देवताओं के लगभग 10-12 मन्दिर यहां निर्मित है। जिनमें ज्यादातर मूर्तियां खण्डित कर दी है या चोरी हो चुकी हैं।

राधाकृष्ण मन्दिर में मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही एक खुला आंगन आता है। आंगन से आगे बढ़ने पर मुखमण्डप में प्रवेश करते है। मुखमण्डप में बाहर और आठ स्तम्भ लगे हुए है, जिनकी बनावट शैली साधारण तरीके की है। मुखमण्डप में कलात्मक चित्रकारी की गई है। इनमें राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंग, गायों के बीच बांसुरी बजाते कृष्ण, उत्सव मनाते लोग, मोर व अन्य पक्षियों के अलावा कई प्रकार के चित्रांकन किए गये है। वर्तमान समय में यह काफी हद तक खुद चुके है, दीवारों के प्लास्टर पर उकेरे गये ये चित्र धुंधले से पड़ गय है, फिर भी हमें अपने समय की कलात्मक चित्रकारी शैली का बोध कराते है। गर्भगृह के प्रवेश द्वार का ऊपरी हिस्सा और चैखट के अलंकरण अत्यन्त सुन्दर है। प्रवेशद्वार के ऊपर मध्य में सूर्यदेव की प्रतिमा उत्कीर्ण है तथा दोनों ओर अन्य देवगण व गंधर्वो की मूर्तियों को उत्कीर्ण किया गया है। यद्यपि समय के साथ ये भग्न अवस्था में दिखाई देते है फिर भी इनकी कलात्मकता के अंकन से निर्वतमान समय की स्थापत्य शैली का ज्ञान होता है।

नाहरगढ़ किले का निर्माण सन 1526 ई. में ढांव के खीची राज के पुत्र नाहरसिंह ने करवाया। बाहर से इस किले की बनावट दिल्ली के लाल किले से मिलती है। इसमे पहले महल थे लेकिन अब वे खण्डहर अवस्था में है। दरवाजे से पश्चिम दिशा में रानियों के ध्वस्त महल स्थित है। परकोटे के दक्षिण में एक बडा तालाब स्थित है। तथा पूर्व में नेक बाबा की मजार है। तथा इसके निकट माताजी का बडा ही प्रसिद्ध मन्दिर स्थित है।

शेरगढ़ हाडौती अंचल में स्थित एक प्राचीन एवं प्रसिद्ध दुर्ग है। यह किला कोटा से लगभग 145 किमी. दक्षिण पूर्व में परवन नदी के किनारे तथा बांरा जिला मुख्यालय से 50 किमी. दूर शेरगढ़ अटरू तहसील में स्थित है। शेरगढ़ सूरी ने अपने मालवा अभियान के समय इस दुर्ग पर अधिकार कर इसे शेरगढ़ नाम दिया। इससे पहले इस दुर्ग का नाम कोशवर्द्धन था जो एतद्नामधारी पर्वत शिखर के नाम पर रखा गया प्रतीत होता है।

जालिमसिंह ने इस किले के चारों तरफ सुदृढ़ बाह्य परकोटे का निर्माण करवाया। जालिमसिंह झाला के अमीरखां पिण्डारी के साथ पगडी बदल भाई के सम्बन्ध थे। इन घनिष्ठ आत्मीय सम्बन्धो की वजह से अमीरखां ने अंग्रेजों के खोप से बचने के लिए अपनी संकटापन्न स्थिति में जालिमसिंह के आग्रह पर अपनी तीन बेगमों व माता सहित शेरगढ दुर्ग के भीतर आश्रय लिया था जहां उसका परिवार संभवत् नवम्बर 1818 ई. तक रहा तथा बाद में अंग्रेजों से सुलह होने तथा टोंक मिलने पर वे वहां से चले गये। इस प्रकार शेरगढ़ दुर्ग साम्प्रदायिक सद्भावना और समन्वय की घटनाओं का भी साक्षी रहा है।

दुर्ग-स्थापत्य की प्रचीन भारतीय परम्पराओं के अनुरूप निर्मित शेरगढ़ दोहरें परकोटे से सुरक्षित है जिसकी प्राचीर के भीतर विशाल बुर्जे बनी है। वहां के प्रचीन देव मंदिरों में

सोमनाथ महादेव, लक्ष्मीनारायण मंदिर, दुर्गा मंदिर, चार भुजा मंदिर प्रमुख और उल्लेखनीय है। मिथुन आकृतियों तथा नाना देवताओं की सजीव प्रतिमाओं से अलंकृत प्राचीन बावडी, भव्य राजप्रसाद, झालाओं की हवेली, अमीरखां के महल सैनिको के आवासगृह, अन्न भण्डार आदि भवन के बीते बैभव की एक सजीव प्रस्तुत करते है।

छबड़ा का दुर्ग जिला मुख्यालय से 65 किमी. दूर छबडा राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित है। इस दुर्ग कों खींची वंश के शासकों और टोंक रियासत के नवाबों ने बनवाया था। यहां पहुचने के लिए बारां से रेल द्वारा तथा रेल्वे स्टेशन से तांगे द्वारा पहुंचा जा सकता है। यह प्रमुख धार्मिक केन्द्र है। यह शिव भक्तों एवं मजार भक्तों का केन्द्र है। पूरा छबडा नगर एक परकोटे में स्थित है तथा ऊपर पहाडी पर दुर्ग है। यह अरावली पर्वत की गंजी डूंगरी के नाम से विख्यात है।

बारां कला व संस्कृति के उत्थान का एक प्रमुख केन्द्र था। यहां की दुर्ग स्थापत्य कला एवं चित्रकला दोनों ही रूपों में अपने स्वरूप का विकास करती है। बारां के दुर्ग यहां की स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरण है। यहां के गढ़ छत्रमहल में बनाये गये चित्रों एवं बून्दी शैली के अन्य चित्रों से यहां की चित्रकला की उत्कृठ विषेशताओं का ज्ञान होता है। इस राज्य की सांस्कृतिक सम्पदा भी श्रैष्ठ है। यहां धार्मिक प्रवृत्तियां सदैव बलवती रही है। इसके अतिरिक्त यह प्रदेश प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण है, जिसके कारण सांस्कृतिक जीवन में मेलों, नृत्य, गीत, संगीत एवं प्रतिभोजों का होना स्वाभाविक है। बारां राज्य कला की दृष्टि से अत्यन्त सम्मुनत था यहां स्थापव्य कला व ललित कलाओं का अत्यधिक उत्कर्ष हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह (2018) “राजस्थान के प्रमुख दुर्ग” राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ.सं.14-17
2. मिश्र, रतनलाल (2008) “राजस्थान के दुर्ग” साहित्यागार, जयपुर, पृ.सं. 38-40
3. भास्कर, अरविन्द सिंह/शर्मा महेश कुमार (2013) “राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग” नाथ पब्लिकेशन्स, सीकर पृ.सं. 15-19
4. भारद्वाज शान्ति/जैन, भगवतीलाल (1989) “हाड़ौती का पुरातत्व” हाड़ौती शोध प्रतिष्ठान, कोटा पृ.सं. 19-22
5. प्रहलाद दुबे (2012) “बारां दर्पण” जिला पुलिस खेलकूद कल्याण समिति जिला बारां (राज.) पृ.सं. 21-23
6. शर्मा, गोपीनाथ (1989) “राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास” रास्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुरर पृ.सं. 116-119
7. औझा गौरीशंकर हीराचंद (1965) “राजपूताने का इतिहास” भाग-2, आदर्श हिन्दी पुस्तकालय, इलाहाबाद पृ.सं. 325-332
8. भल्ला, एल.आर. (1985) “राजस्थान का भूगोल” कूलदीप पब्लिकेशन्स, अजमेर, पृ.सं. 48-53
9. सक्सेना, आशुतोष (2012) “राजस्थान के ऐतिहासिक पुरातत्व”, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर पृ.सं. 151-156

Corresponding Author

Anil Mermit*

Research Scholar, History Department, Kota University, Kota